**ओ३म्**

**“अनादि से अनन्त काल की यात्रा में जीवात्मा कर्मानुसार अनेक**

**प्राणी योनियों में विचरता रहा है और आगे भी विचरेगा”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

यदि हम आर्यसमाज की बात न करें और इतर मनुष्यों व समुदायों की बातें करें तो हम देखते हैं कि मनुष्य को जड़ व चेतन का भेद व उसका तत्वार्थ ज्ञात नहीं है। मनुष्य का जन्म होता है, माता-पिता उसका पालन करते हैं, स्कूल व कालेजों में पढ़ने के लिए उसे भेजा जाता है, वहां जो पढ़ाया जाता है वह पढ़ता है, उसके बाद वह अपने भविष्य के कार्य व व्यवसाय को चुनता है और उसके लिए जो करना होता है, उसे करते हुए वह अपने मुकाम व लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। मुकाम प्राप्त हो जाये तो सुख मिलता है, नहीं तो वह कुछ दुःखी व चिन्ता में रहते हुए अपना जीवन व्यतीत कर देता है। वृद्धावस्था आती है, कुछ को रोग हो जाते हैं, उपचार चलता है और 50 से 80 के बीच अधिकांश स्त्री व पुरुषों की जीवनलीला समाप्त होकर मृत्यु हो जाती है। यदि इनमें कोई बचता है तो वह कुछ वर्ष बाद चल बसता है। जीवित व मृतक मनुष्य कहां से आये थे यह उन्हें पता नहीं होता। कहां जाना है व मरकर गये, इसका पता न उनको था न माता-पिता व परिवार के लोगों को ही होता है। परिवार के छोटे व बड़े लोग हैं, वह भी अपने कार्यों में लगे हुए सुखों को भोगने की इच्छा रखते हुए व प्रयास करते हुए अपने जीवन को आगे बढ़ाते रहते हैं और जब तक मृत्यु न आये यही क्रम चलता है। प्रायः सभी लोग इसी को जीवन मानते हैं। उनके अनुसार जीवन का और कोई विशेष लक्ष्य आदि नहीं है। वेद से इतर अनेक मत-मतान्तर हैं, सबकी अपनी अपनी मान्यतायें हैं। कुछ बातें सत्य हैं तो बहुत सी मिथ्या व अविवेकपूर्ण भी हैं। वह सब अपने अपने अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

वैदिक धर्मियों के पास सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर द्वारा दिया गया वेदेां का सत्य ज्ञान है जिसमें मनुष्य जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य को तो बताया ही गया है, उसकी प्राप्ति के साधनों ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, पितृयज्ञ आदि सहित परोपकार व सेवा आदि के कामों का विधान भी किया गया है। वेदों के अनुसार यह संसार ईश्वर, जीव व प्रकृति इन तीन मौलिक सत्ताओं व तत्वों से मिलकर बना है। ईश्वर व जीव चेतन तत्व हैं। ईश्वर सर्वज्ञ एवं जीव अल्पज्ञ है, ईश्वर सर्वव्यापक है तो जीवात्मा एकदेशी, अल्पपरिमाण, ससीम, कर्मानुसार जन्म व मृत्यु के बन्धनों में बंधा हुआ है। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप होने से सदा-सर्वदा आनन्द से युक्त रहता है। वह सर्वान्तर्यामी होने से जीवात्मा के अन्दर व बाहर सर्व़व्यापक है। जीवात्मा सच्चित (सत्य$चेतन) है, आनन्द से युक्त नहीं है जैसा कि ईश्वर है। चेतन सत्ता होने के कारण इसे आनन्द वा सुखों की अभिलाषा रहती है। अज्ञान के कारण यह भौतिक पदार्थों की ओर अपना मुख करता है। भौतिक पदार्थों में सीमित व अल्प मात्रा में सुख हैं। उसी में यह उलज्ञ जाता है। भौतिक सुखों के लिए ही यह धन व द्रव्यों का संग्रह करता है। परिग्रही बनता है। धनोपार्जन व भौतिक सुखों में ऐसा लिप्त होता है कि ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप व इनके गुणों की उपेक्षा कर देता है। जीवात्मा को लक्ष्य का ज्ञान कराने में सबसे बड़ी बाधा मत-मतान्तर हैं। इसका कारण है कि इनमें ईश्वर व जीवात्मा का यथार्थ, तर्क व युक्तिसंगत ज्ञान नहीं है और न ही यह जानना चाहते हैं। इन मत-मतान्तरों की नींव अविद्या पर है। ऐसा नहीं कि सभी मत-मतान्तरों में शत प्रतिशत अविद्या ही हो, किसी में कम व किसी में अधिक भाग अविद्या का है परन्तु इनमें जितनी अविद्या है उसके कारण यह ईश्वर व जीवात्मा को भली प्रकार से जान नहीं पा रहे हैं। यह सभी मत-मतान्तर अपने जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य ‘धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष’ तथा उसके साधनों को जानकर उनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करते क्योंकि उन्हें इनका यथार्थ स्वरूप विदित नहीं है। संसार में अशान्ति का कारण भी अविद्या व मिथ्या ज्ञान ही सिद्ध होता है। यदि यह अविद्या व मिथ्याज्ञान समाप्त हो जाये तो संसार से दुःख व अशान्ति अपने आप दूर हो सकती है। संसार व जीवन विषयक सत्य स्थिति को जानकर कोई मनुष्य किसी के प्रति अन्याय व अत्याचार नही कर सकता। हिंसा व चोरी सहित धन व द्रव्यों का परिग्रह भी नहीं कर सकता। इसका कारण यह है कि उसे ज्ञात हो जाता है कि सृष्टि के सभी पदार्थों ईश्वर ने सभी मनुष्यों व प्राणियों के लिए बना रखे हैं और इन पर सबका समान अधिकार है। ईश्वर की आज्ञा **‘तेन त्यक्तेन भुंजीथा’** है कि मनुष्यों को सभी सांसारिक पदार्थों का भोग त्यागपूर्वक करना है। नहीं करेंगे तो दण्डनीय होंगे। यह दण्ड मनुष्य को इस जन्म व परजन्म में कब कैसे ईश्वर से प्राप्त होगा उसका ज्ञान ईश्वर ने आवश्यक न समझ कर वेदों में नहीं दिया है। फिर भी हम अपने अपने विवेक से व शास्त्रों में ऋषियों द्वारा किये गये विवेचन को पढ़कर कुछ कुछ जान सकते हैं।

ईश्वर, जीव व प्रकृति तीनों अनादि, अनुत्पन्न, सनातन, सदा रहने वाले, अनन्त काल तक रहने वाले, अमर व अविनाशी मौलिक पदार्थ हैं। ईश्वर अजन्मा होने से उसका जन्म व अवतार कभी नहीं होता। मनुष्य व अन्य प्राणियों के रूप में जीवात्मायें ईश्वरीय व्यवस्था से जन्म लेती हैं। इसका आधार पूर्व जन्म के कर्म होते हैं। ईश्वर हमारे पूर्व के सभी अनन्त जन्मों का साक्षी है। किसी जीवात्मा के जिन कर्मों का भोग करना शेष है, उनमें से कुछ व सभी कर्मों के आधार पर ईश्वर जीव को मनुष्य व अन्य योनियों में पक्षपातरहित होकर जन्म देता है। यही क्रम अनन्त काल तक आगे भी चलना है। इस जन्म में हम मनुष्य बने हैं। हमें अपने जन्म से अब तक घटी प्रायः सभी प्रमुख बातों का किसी का कम व किसी का पूर्ण ज्ञान है। जन्म से पूर्व हम थे या नहीं, थे तो कहां थे और नहीं थे तो इस जन्म में हमारी आत्मा जो कि एक चेतन सत्ता है, जो सुख, दुःख, हानि, लाभ, मान, अपमान, ईष्र्या व द्वेष का अनुभव व व्यवहार करती है, वह कहां से व कैसे इस मानव शरीर में आ गई। इन सभी प्रश्नों का समुचित निभ्र्रान्त उत्तर मत-मतान्तरों के ग्रन्थों व आचार्यों से नहीं मिलता, केवल वेद और वैदिक साहित्य में मिलता है। पुराण आदि ग्रन्थ इस विषय में परस्पर विरोघी व अविश्वसनीय बातें करते हैं। इस जन्म से पूर्व सुख व दुख का अनुभव करने वाली हमारी आत्मा का अस्तित्व नहीं था, इसका किसी के पास कोई भी प्रमाण नहीं है। बिना प्रमाण के ही हम यह मानते रहते हैं कि हमारा अस्तित्व नहीं था। हमें तो यह व्यवहार बुद्धिहीनता व मूर्खता का प्रतीत होता है। हम जीवात्मा के अस्तित्व, उसके स्वरूप, गुण-कर्म-स्वभाव व उत्पत्ति विषयक प्रश्नों को जानने का भी प्रयास नहीं करते। यदि हमारा इस जन्म से पूर्व अस्तित्व न होता अर्थात् हमारा पूर्वजन्म न होता तो संसार के सभी मनुष्य व प्राणियों में, जिनके शरीरों में एक-एक चेतन आत्मा है, किसी भी प्रकार का भेद नहीं होना चाहिये था। सबकी आकृति, प्रकृति, संवेदनायें, ज्ञान व कर्म तथा परिवेश एक जैसे होने चाहिये थे। दो व अधिक मनुष्यों के देश, काल व परिस्थितियों तथा गुण-कर्म व स्वभाव में भेद **‘कर्मफल सिद्धान्त व पूर्वजन्म’** को सिद्ध करता है। हमारा पूर्वजन्म था, हमारे कर्म अलग अलग थे, उसी के अनुसार पुरस्कार व दण्ड स्वरूप हम मनुष्यों व इतर प्राणियों को नाना प्रकार के शरीर व अच्छी-बुरी परिस्थितियां ईश्वर द्वारा हम सभी को दी र्गइं हंै। हमारा कर्तव्य है कि हम ईश्वर, जीव व प्रकृति के स्वरूप पर विचार व चिन्तन-मनन करें। जिन प्रश्नों के उत्तर न मिले उसके लिए हमें सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेद, दर्शन व उपनिषद् आदि ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये। अन्धविश्वास के आधार पर किसी ग्रन्थ की कोई बात न मानें। जो तर्क व युक्तिसंगत हो, सृष्टिकर्म के अनुकूल हो तथा जिसे अपनी आत्मा स्वीकार करे, उसी बात को ही मानना चाहिये। ऐसा करके जीवात्मा के सत्य, स्वतन्त्र, अनादि, अनुत्पन्न, जन्म-मरण धर्मा, कर्मानुसार सुख व दुखों को भोगने वाले चेतन स्वरूप का निभ्र्रान्त ज्ञान होता है। ईश्वर व प्रकृति के सत्यस्वरूप सहित अपने लक्ष्य, उसकी प्राप्ति के साधनों व कर्तव्यों का ज्ञान भी हो जाता है।

मनुष्य के रूप में हम विद्यमान है। हमारा अस्तित्व चेतन जीवात्मा व मरणधर्मा शरीर का एक संयुक्त जीवन्त रूप है। सभी लोगों की जीवनयात्रा अनादि काल से चल रही है। लक्ष्य दुःखों से सर्वथा मुक्ति है जिसे मोक्ष कहते हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए ईश्वर का सत्य ज्ञान व उपासना से उसका साक्षात्कार करना आवश्यक है। साक्षात्कार तभी होता है जब जीवात्मा अपने पूर्व अशुभ कर्मों को प्रायः भोग लेता है और सद्कर्मों को करके आत्मा को पवित्र व दोषरहित कर लेता है। हमें लगता है कि उपासना में देर से सफलता मिलने का एक कारण हमारे जन्म जन्मान्तर के अशुभ कर्म व उनका पूर्णतया भोग कर उन्हें समाप्त करना है। जब तक अशुभ कर्मों का भोग पूरा नहीं होता, प्रयत्न व पुरुषार्थ करने पर भी जीवात्मा को ईश्वर साक्षात्कार नहीं होता। यदि अशुभ कर्म अधिक होंगे तो उपासना आदि साधनों को करने पर भी ईश्वर साक्षात्कार में विलम्ब हो सकता है। अतः मनुष्य जीवन में वेदाध्ययन से सत्य ज्ञान प्राप्त कर ईश्वर की उपासना व सद्कर्मों पर ध्यान देना चाहिये। अशुभ कर्म पूर्णतः बन्द कर देने चाहिये। ऐसी अवस्था बना लेने पर भी भोग के लिए बचे हुए पूर्व के अशुभ कर्मों के कारण जीवन में दुःख आ सकते हैं। ऐसा होने पर दुःखी न होकर अपने मोक्ष के साधनों के अनुसार कर्तव्य पथ का अनुसरण व अनुगमन करते रहना चाहिये। ईश्वर का साक्षात्कार हो या न हो, हमें लगता है कि शुभ कर्म व उपासना आदि साधनों का सही प्रकार से सेवन करने से हम उपासना व ईश्वर-साक्षात्कार में आगे बढ़ते हैं। इसे जारी रखना चाहिये और स्वयं को ईश्वर में समर्पित रखना चाहिये। ऐसा होने पर हम तीव्र गति से आगे बढ़ सकते हैं। यह विश्वास रखना चाहिये कि हम ईश्वर द्वारा वेदों में कही गई ईश्वर की प्राप्ती की यात्रा पर सही दिशा में चल रहे हैं तो मंजिल कभी न कभी तो आयेगी ही। मंजिल दूर है अतः समय लग सकता है। यह जरूरी नहीं की हमें हमारी मंजिल मोक्ष इसी जन्म में मिल जाये। हमारे ऋषि व विद्वान बताते हैं कि मोक्ष प्राप्ति में अनेक जन्म भी लग सकते हैं। इसके लिए धैर्य की आवश्यकता है। शायद इसी लिए धैर्य को धर्म का प्रथम लक्षण बनाया गया है।

जीवात्मा अनादि काल से जन्म मरण के बंधनों में बंधता व छूटता आ रहा है। हमारा अनेक बार मोक्ष भी हुआ है और अनेकानेक, अनन्त बार जन्म व मरण भी हुआ है। हम संसार में दृष्टिगोचर होने वाली प्रायः सभी योनियों में एक व अनेक बार हम रह आये हैं और आगे भी यह क्रम जारी रहेगा। हम व अन्य कोई जीव दुःख नही चाहता। इन अनचाहे सभी दुःखों से बचने का एकमात्र उपाय केवल मोक्ष के साधनों का सेवन व व्यवहार है। मोक्ष को प्राप्त होकर जीवात्मा बहुत लम्बी अवधि, 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक, मुक्ति में दुःखों से सर्वथा मुक्त रहेंगे और ईश्वर के सान्निध्य से उसके आनन्द को भोगेंगे। उसके बाद पुनः जन्म, मरण, पुनर्जन्म होगा और देर में व शीघ्र फिर मुक्ति हो सकती है। यह वेद व शास्त्रों का ज्ञान है। इसमें वेद सहित हमारे दर्शन व उपनिषदकार आप्त ऋषि प्रमाण हैं जो असत्य व अनुचित कथन व शब्द प्रयोग कभी नहीं करते। अतः इस पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये। हम यह भी बता दें कि हम कोई बड़े साधक नहीं है। हमने जो पढ़ा, विचार किया व हमें उचित लगा, उसे हमने इस लेख में दिया है। हमें लगता है कि हमारे विद्वान हमसे इन विषयों में पूर्णतः व कुछ सीमा तक सहमत होंगे। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**-आर्ष गुरुकुल पौंधा के वार्षिकोत्सव में गुरुकुल सम्मेलन में कुछ विद्वानों के विचार-**

**“जो मनुष्य आध्यात्मिक विकास की ओर चलता है वह दुर्गुणों**

**और दुर्व्यसनों से दूर रहता हैः डा. सोमदेव शास्त्री”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्ष गुरुकुल पौंधा, देहरादून में वैदिक शिक्षा व विद्या का प्रमुख केन्द्र है। इस गुरुकुल का अट्ठारवां वार्षिकोत्सव 2 जून से आरम्भ होकर 4 जून को सम्पन्न हुआ। दिनांक 4 जून, 2017 को गुरुकुल सम्मेलन सहित सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई व साथ मुख्य अतिथि पंतजलि योगपीठ के आचार्य बालकृष्ण जी का अभिनन्दन हुआ। हम इस अभिनन्दन समारोह का समाचार व गुरुकुल सम्मेलन में अनेक विद्वानों के व्याख्याने को पूर्व दिनों में प्रस्तुत कर चुके हैं। आज शेष रहे व्याख्यानों को प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि आप पसन्द करेंगे।

**डा. सोमदेव शास्त्री जी का व्याख्यानः**

अपने व्याख्यान के आरम्भ में डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई ने आचार्य शब्द की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि जिसके द्वारा ब्रह्मचारी विद्यार्थियों की शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक शक्ति का विकास किया जाये तथा जिससे इन विषयों की सत्य व यथार्थ शिक्षा मिले उसे आचार्य कहते हैं। डा. सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि आचार्य को ईश्वर, जीव व प्रकृति के विषय में जो शिक्षा देनी है उसका आधार वेद ही हो सकता है। वेदाध्ययन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि परमात्मा को प्राप्त करना तभी हो सकता है जब गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की आत्मिक शक्ति का विकास किया जाये। ब्रह्मचारियों के जीवन व चरित्र विषयक न्यूनतायें दूर कर दी जायें। ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करते हुए ब्रह्मचारी परमात्मा की प्राप्ति को अपने जीवन का लक्ष्य बनायें। आचार्य जी ने यज्ञोपवीत धारण करने व उसके महत्व पर भी अपने विचार प्रस्तुत किये। विद्वान वक्ता ने कहा कि आचार्य माता द्वारा गर्भस्थ शिशु का ध्यान रखने की ही भांति अपने ब्रह्मचारी का ध्यान रखता है। ब्रह्मचारी की शारीरिक, आत्मिक ओर बौद्धिक उन्नति करना आचार्य का उद्देश्य है।

आचार्य जी ने ऋषि दयानन्द जी के कथनों का उल्लेख कर कहा कि सन्ध्या एवं दैनिक अग्निहोत्र का अनध्याय नहीं होता। उन्होंने कहा कि जो मनुष्य आध्यात्मिक विकास की ओर चलता है वह दुर्गुणों व दुव्र्यस्नों से दूर रहता है। आचार्य जी ने पठन पाठन में ग्राह्य व निषिद्ध ग्रन्थों की चर्चा भी की। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने उन ग्रन्थों को निषिद्ध किया है जिसमें अश्लील संवाद व चर्चायें हैं। उन्होंने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द ने खगोल ज्यातिष को स्वीकार किया है तथा फलित ज्योतिष को निषिद्ध किया है। ऋषि दयानन्द ने पाखण्ड व अंधविश्वासों से समाज को बचाया। आचार्य सोमदेव शास्त्री ने फलित ज्योतिष की अव्यवहारिक बातों पर विस्तार से सप्रमाण प्रकाश डाला। फलित ज्योतिष पर हमने डा. सोमदेव शास्त्री जी के अनेक स्थानों पर व्याख्यानों को सुना है। आपने फलित ज्योतिष का विशेष अध्ययन किया हुआ है और उसकी अनेक मिथ्या मान्यताओं को भी स्मरण किया हुआ है जिसका वह अपने व्याख्यानों में यथास्थान उद्धरण देते रहते हैं। यहां भी उन्होंने मिथ्या फलित ज्योतिष के अनेक उदाहरण दिये। डा. सोमदेव शास्त्री ने मंगल व शनि ग्रहों के मनुष्य जीवन पर प्रभावों व इनसे होने वाली हानियों का खण्डन किया। तुलसीदास जी के मूल नक्षत्र में जन्म लेने, मूल नक्षत्र में जन्म लेने वालों को होने वाली हानियों तथा उन सभी हानियों से बचने के उपायों सहित पौराणिक मान्यताओं पर विस्तृत प्रकाश डाला और उनका उनका खण्डन किया।

डा. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि आचार्य ब्रह्मचारी की उन्नति का दायित्व लेता है। उन्होंने कहा कि हमारे स्कूलों में सदाचार की शिक्षा नहीं दी जाती है जिससे देश की भावी युवा पीढ़ी पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। गुरुकुलों में यम व नियमों का पालन कराया जाता है परन्तु स्कूलों में इन महत्वपूर्ण जीवनोपयोगी बातों को पढ़ाया नहीं जाता। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए उन्होंने कहा कि वह माता-पिता जिनकी सन्तानें गुरुकुलों में पढ़ती है, धन्य हैं।

**डा. विनय विद्यालंकार, हल्द्वानीः**

गुरुकुल सम्मेलन में बोलते हुए युवा आर्य विद्वान व प्रभावशाली वक्ता डा. विनय विद्यालंकार ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत से आरम्भ अविद्यांधकार में पड़े भारत देश को अन्धकार से बाहर निकालकर उसे प्रकाश में लाने का काम किया। अविद्यान्धकार को मिटाने व ज्ञान का प्रकाश करने का हमारे पास एक ही उत्तम साधन गुरुकुल हैं। विद्वान वक्ता ने कहा कि आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार का श्रेय हमारे गुरुकुलों व इसके विद्वानों को जाता है। डा. विनय जी ने विगत दिनों महाविद्यालय स्तर पर आयोजित एक गोष्ठी की चर्चा की जिसका संचालन उन्होंने किया था। उन्होंने बताया कि उन्होंने गोष्ठी को ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों व मान्यताओं पर केन्द्रित करने का प्रयास किया जिसमें वह सफल रहे। डा. विनय विद्यालंकार जी ने कहा कि वेदों का राष्ट्र व्यापक राष्ट्र है। वेदों के आधार पर हम विकसित राष्ट्र की कामना कर सकते हैं। गुरुकुल से जुड़ कर हम देश को उन्नत करने की कामना को सफल कर सकते हैं। आचार्य जी ने मनुष्य में पलने वाले अहंकार की चर्चा की। उन्होंने कहा कि यदि सार्वदेशिक सभा का नेतृत्व स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के हाथों में सौंप दें तो सारा आर्यजगत उन्हें स्वीकार कर लेगा। डा. विनय जी ने कहा कि गुरुकुलों से ही आर्यसमाज का संगठन बचेगा। उन्होंने धर्म प्रेमी ऋषिभक्तों को कहा कि यहां से विद्वानों से सुने विचारों को अपने साथ ले जायें। अपने परिवारों में ऋषि दयानन्द जी के विचारों को स्थान दें व उनका आचरण करें। अपने घरों को गुरुकुल बना दें। यहां की विशेषतायें अपने घरों में स्थापित करें। प्रातः 4.00 बजे उठें आप अपने बच्चे गुरुकुल में पढ़ायेंगे या गुरुकुल के निर्धन बच्चों को गोद लेंगे तो आर्यसमाज का काम आगे बढ़ेगा। डा. विनय विद्यालंकार जी का व्याख्यान ओजस्वी व प्रवाहपूर्ण था जिसके समापन श्रोताओं ने करतल ध्वनि कर व्याख्यान की महत्ता की पुष्टि की।

**आचार्य दयाशंकर विद्यालंकारः**

हम स्वामी दयानन्द के इस कारण अनुयायी हैं कि उनका चरित्र सबसे महान है। उन्होंने आजादी से पूर्व देश में अंग्रेजी सरकार की सोच की चर्चा करते हुए बताया कि उन्होंने यह तय किया था कि भारत को बर्बाद करने के लिए इस देश का चरित्र व इसकी प्राचीन मूल्यों पर आधारित शिक्षा का नाश करना है। इसके लिए विदेशी सरकार द्वारा कान्वेंट शिक्षा लाई गई। आचार्य दयाशंकर ने इससे संबंधित व पाठ्यक्रम विषयक कुछ उदाहरण भी दिये और इसी सन्दर्भ में रिमझिम नामक पुस्तक की चर्चा भी की। उन्होंने भाजपा विरोधी दलों की चर्चा करते हुए कहा कि यदि हम पाठ्यक्रम तो ठीक करें तो ये लोग हम पर भगवाकरण के आरोप लगाते हैं। आचार्य दयाशंकर जी ने मां के खून, दीपक की लौ वा ज्योति, सूरज के भगवे रंगों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि इन रंगों के अतिरिक्त मनुष्य के मरने पर अन्त्येष्टि करने पर जो अग्नि जलती है उसका रंग भी भगवा होता है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मनुष्य का जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त रंग भगवे रंग में रंगा है। आचार्य जी रेलवे बोर्ड सहित भारत सरकार की कई परामर्शदात्री समितियों के सदस्य हैं। उन्होंने बताया कि आगामी दिनों में रेलवे बोर्ड द्वारा रेल में मांस व अण्डों से बना भोजन देना बन्द किया जा सकता है। आचार्य दयाशंकर जी ने गुरुकुल को सरकार के सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने श्रोताओं को याद दिलाया कि उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद भाजपा मुख्यमंत्री श्री भुवनचन्द्र खण्डूरी जी ने संस्कृत को राज्य की दूसरी राजभाषा बनाया था।

**ऋषि भक्त** **ठाकुर विक्रम सिंहः**

आर्यसमाज की प्रसिद्ध विभूति व ऋषि भक्त ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा कि वह गुरुकुलों में तो नहीं पढ़े लकिन गुरुकुलों से उन्हें सबसे अधिक प्रेम है। श्री विक्रम सिंह जी ने बताया कि वह महात्मा नारायण स्वामी आश्रम में पढ़े हैं। हापुड़ में पं. रामचन्द्र देहलवी जी के चरणों में बैठकर भी वह पढ़े हैं। विद्वान वक्ता एवं ऋषि भक्त ठाकुर विक्रम सिंह जी ने उड़ीसा में संचालित गुरुकुलों की चर्चा की और कहा कि वहां बहुत बड़ा काम स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने किया। आज की सामाजिक स्थिति पर व्यंग करते हुए ठाकुर साहब ने कहा कि आज समाज में मनुष्यों के रूप में पशु घूम रहे हैं जिन्होंने न तो विद्यार्जन किया है और न वह परोपकार आदि के काम ही करते हैं। ऋषि भक्त विक्रम सिंह जी ने कहा कि यदि आप संस्कृत नहीं पढ़े हो तो संस्कृत पढ़ो, अपने बच्चों को पढ़ाओं और गुरुकुलों को सहयोग दो। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कालिदास व राजा भोज का प्रसंग सुनाया। राजा भोज ने कालिदास जी को अपने ऊपर एक कविता की पंक्तियां लिखने को कहा था। कालिदास नहीं माने और नगर छोड़कर दूर जंगलों में चले गये। राजा भोज ने उन्हें ढूंढ निकाला। वेश बदल कर वह कालिदास के पास गये और उनसे चर्चा की। कालिदास ने उनसे राजाभोज के बारे में पूछा तो वह बोल कि राजा भोज अब संसार में नही रहे। यह सुनकर कालिदास जी दुःखी हो गये और राजा भोज के गुणों का उल्लेख संस्कृत में कविता करके करने लगे। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कालिदास की वह कविता भी सुनाई। इसके एक वाक्य का अर्थ था कि राजा भोज दुनिया से क्या गये, सारी दुनिया संस्कृत विद्या से विहीन हो गई है। अपने भाषण को विराम देते हुए विद्वान वक्ता ने कहा कि संस्कृत भाषा मेें जो विशेषतायें हैं वह किसी भाषा में नहीं हैं।

**आचार्या डा. अन्नपूर्णा, द्रोणस्थली कन्या गुरुकुलः**

आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि गुरुकुल का उद्देश्य मानव का निर्माण करना है। गुरुकुल में मनुष्यों की पाशविक प्रवृत्तियों को नियंत्रित कर उसे मनुष्य बनाया जाता है। ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान गुरुकुल में ब्रह्मचारियोें को कराया जाता है। हमारा शरीर यज्ञमय है अतः हमें यज्ञ व यज्ञीय कार्यों को करना चाहिये। हमें हमारा शरीर संसार का कल्याण करने के लिए ईश्वर से प्राप्त हुआ है।

इसके बाद मुख्यतः पतंजलि योगपीठ के विख्यात आचार्य बालकृष्ण जी का सम्मान हुआ। इस समारोह को स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं आचार्य बालकृष्ण जी ने सम्बोधित किया। हम इन दोनों महानुभावों के विचार 5 जून, 2017 को पहले ही एक लेख में प्रस्तुत कर चुके हैं जिन्हें काफी सराहा गया है। हमें भी वह विचार अच्छे लगे जिससे हमारा किया गया परिश्रम सफल हो गया। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**